प्रत्युत्तर

सुनीता बौद्ध
मो. 9058526830

शहर के लोकप्रिय चौराहे पर बैठी रमा प्रतिदिन आते-जाते राहगीरों को एकटक देखती रहती। यौवन का ढलान, मन में वेदना, मस्तिष्क में आंधी और आंखों में पानी की बरसात लिए वह जीवन के आने का प्रतिदिन इंतजार करती। सुरजीत, सुजान और दुर्गा की विधवा मां जो कभी शहर में बने मकान और पति जीवन की ईमानदारी से हवा में उड़ा करती थी। सुख सुविधाओं का ठीक-ठाक प्रबंध था। महामारी कोरोना से पांच वर्ष पूर्व पति जीवन गांव छोड़कर अपने बच्चों की अच्छी शिक्षा के लिए शहर आए थे। आढ़तिया के काम से उन्हें आर्थिक तौर पर मजबूती मिली थी। कठिन परिश्रम से पाई-पाई जोड़कर शहर के मुख्य चौराहे के पास सौ वर्ग जमीन खरीद कर रहने लायक घर बना लिया था। जिंदगी अच्छी चल रही थी। पति श्रम पर भरोसा करते थे और पत्नी प्रभु पर इस बात को लेकर कभी-कभी दोनों में बहस भी हुआ करती थी। धर्म-कर्म में रमी रमा का ईश्वर भक्ति तक तो ठीक था लेकिन धार्मिक अंध विश्वास और ढोंग से जीवन कभी-कभी बहुत चिढ़ता था। शहर में आने के बाद रमा ने सभी जाने-माने मंदिरों के दर्शन कर लिए थे। चर्चित बाबाओं के यहां जाकर आशीर्वाद प्राप्त कर लिया था। जब कभी जीवन बच्चों की फीस भरने के लिए कहते तो उनका कलेजा धध क उठता, पैरों में दर्द शुरू हो जाता था। जीवन सप्ताह में एक दो बार पूछ ही लेते 'अरी ओ दुर्गा की मम्मी! अपने बच्चे प्रतिदिन पढ़ने तो जा रहे हैं ना उनकी फीस जमा हो गई है।' प्रतिदिन के सवालों का एक ही उत्तर मिलता 'हां! अभी मैं पूजा कर रही हूं शाम को बात करती हूं।'

कच्चे आढ़तिए को तो तब भी कुछ समय मिल जाए लेकिन पक्के आढ़तिए के घर लौटने का कोई समय निश्चित नहीं होता। परिणामस्वरूप सुरजीत, सुजान और दुर्गा की प्रतिदिन की शैक्षिक प्रगति रिपोर्ट अधूरी ही रहती। श्रमजीवी श्रम में, धर्मजीवी धर्म में, और बच्चे अपनी मस्ती में जी रहे थे।

शाम का वक्त और चौ-मुहानी के कोलाहल को चीरता हुआ एक युवक रमा के दरवाजे को बदहवासी में खटखटाये जा रहा था। 'दुर्गा की अम्मा!

ओ दुर्गा की अम्मा! आपको कोई खबर मिली? दुर्गा के बापू की एक मंदिर के पास पीट-पीटकर हत्या... मेरे मोबाइल में उनका फोटो आ रहा है।'

ज्यों ही फोटो देखा रमा चीखने लगी, 'यह ऊँच-नीच का कीड़ा शहर में भी हमारा पीछा नहीं छोड़ रहा है यहां के पढ़े-लिखे लोग भी जात-पांत करते हैं।' उसने पूछा, 'तुम्हें कैसे पता? तुम हत्यारों को जानती हो? कौन है?' वह युवक पूछे ही जा रहा था।

कारूणिक स्वर में रमा बताए जा रही थी, 'मैंने ही आज उन्हें जबरदस्ती अपने शहर के प्रसिद्ध मंदिर में पूजा के लिए जोर देकर भेजा था। मैं कृतज्ञ थी कि ईश्वर की कृपा से मुझे सब कुछ मिला। पर हाय रे! जात-पांत तूने मेरा सब कुछ छीन लिया मैंने उनकी एक न सुनी। क्या ईश्वर भी भेद-भावी है?'

अवचेतन मन में अन्य सामाजिक घटनाएं उभरने लगी। वैधव्यता का डर बैठ गया। दुख, शोक, अकेलापन सामाजिक दायरे और आर्थिक तंगी की गलियों में जिम्मेदारियों की पूर्व की जिंदगी दिखाई देने लगी। 'नहीं... नहीं मुझे ही संभालना होगा। आप ठीक कहते थे। मैं बच्चों की तरह अब पूरा ध्यान दूंगी।' रमा विकल थी। स्नेहपालितों की आर्थिक और शैक्षिक जिम्मेदारी दोहरे रूप में मुँह बाँए खड़ी थी वैसे भी पुराने दर्द की दवाई नया दर्द ही होता है। कई शाम, कई सुबह बीती रमा ने अपने बचत के पैसों से एक गाय खरीद ली। दूध और उपले बेचकर जीवन यापन चलने लगा। बच्चों का मन पढ़ने में कम लग रहा था सुरजीत और सुजान बुरी संगत में पड़ चुके थे। शिक्षा से विमुख भी हुए और व्यसनों में लिप्त भी। मां की अधिक धार्मिक अंधता ने बच्चों की नैतिक और शैक्षिक दोनों जड़े कमजोर कर दीं। एक तो करेला दूजै नीम चढ़ा।। सुख के दिन लद गए थे। बेटी दुर्गा सयानी हुई तो एक शाम रमा ने जिक्र किया, 'तुम्हारी बहन बड़ी और सयानी हो गई है तुम्हें नहीं लगता कि अब इसका विवाह किया जाए।'

'पर पैसे कहां से आएंगे' सुरजीत और सुजान ने एक स्वर में बोला। 'तुम दोनों को ही व्यवस्था करनी है तुम्हारे सिवा अब यह कौन करेगा बेटा' रमा ने दोहराया। 'मैं कल बताऊं।' सुरजीत यह कहकर ड्यौढ़ी की तरफ तेजी से बढ़ा। सुजान ने भी 'हां' में 'हां' की।

रमा को रात भर नींद ना आई। अपनी दुहिता के लिए दुश्चिंता थी। पैर सीधे नहीं पड़ रहे थे। दूसरी पहर उसने दोनों बेटों से पूछा, 'कुछ सोचा'

'हां हम दोनों ने शहर के बड़े सेठ रग्गी लाला से बात की है वह हमें दो लाख देने के लिए तैयार हैं आप इस पर अंगूठा लगा दो' यह कहकर कुछ दस्तावेज रमा की तरफ खिसका दिए। 'यह क्या है?'

'मकान के कागज है मां! हम इसे अब गिरवी रख रहे हैं। इसके अलावा हमारे पास कोई और चारा नहीं है।'

'सुरजीत! सुजान! तुम्हें शर्म नहीं आ रही है यह सब करते हुए। तुम्हारे पिता ने खून पसीने से कमाकर हमें यह घर बना कर दिया था और तुम दो कौड़ी में ही इस गिरवी रखना चाहते हो।' रमा ने यह कहते हुए दस्तावेज दूर झिड़क दिए।

'कैसी शर्म? जिस ईश्वर की मर्जी से हम गांव छोड़कर शहर आए। रहने लायक घर बना उसी की मर्जी से यह घर भी गिरवी रखा जा रहा है इसमें इतना तो नहीं सोचना चाहिए मां।'

रमा की पूर्व यादों के झरोखे रह-रह कर जहन में अंकित होने लगे। उसके पति जीवन कहते थे कि 'धार्मिकता जहाँ हमें नैतिक मूल्यों के निर्माण में सहायक है उसी प्रकार शिक्षा और श्रम हमारे लक्ष्य प्राप्ति में सहायक है। धर्म के साथ परिश्रम को जोड़ दिया जाए तो सफलता निश्चित है। 'रमा! तुम कुछ समझने को तैयार ही नहीं हो। तुम्हारा यह धार्मिक पाखंडवाद का नशा शराब के नशे से भी ज्यादा घातक है। एक पुरुष भले ही शराबी हो जाए पर पाखंड वादी नहीं होना चाहिए और महिला को तो अंधविश्वास ढोग से बिल्कुल दूर ही रहना चाहिए। शराबी पुरुष से ज्यादा घातक एक अंधविश्वासी और ढोंगी महिला होती है। तुम अपनी इस फसल का बोया हुआ एक दिन जरूर काटोगी।

जीवन की बीती बातें याद करते हुए रमा के मानस पटल पर अतीत की यादें हिलोरें लेने लगीं। अश्रुपूरित नयन जमीन में गड़े जा रहे थे। प्रत्युत्तर भी था और पश्चाताप भी, परंतु उसे सुनने वाला जीवन इस दुनिया से रुखसत हो चुका था।❑

चार्वाक का मत

चार्वाक की प्राचीनता सिद्ध करने के लिए कोई तारीख निश्चित नहीं की जा सकी है, लेकिन चार्वाक भारत में पैदा हुआ दुनिया का पहला व्यक्ति था जो अखिल विश्व से कहता है-'कोई ईश्वर नहीं है।'